दिनांक :- 30-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ॰ फ़ारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड इतिहास
एकाई :- पांच
विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
पत्र :- एक
अध्याय :- उत्तरवैदिक काल स्त्रोत

राजत्व का सिद्धान्त :-

उत्तर वैदिक काल में पहली बार क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। वैदिक आर्यों का कबीलाई ढांचा टूट गया। अब जन के बदले जनपदों की स्थापना हुई तथा युद्ध गायों के लिये न होकर क्षेत्र के लिये होना लगा। राजतंत्र का स्वरूप भी कबीलाई से बदलकर क्षेत्रीय हो गया। राजा के पद का महत्व उत्तर वैदिक ग्रंथों में मिलने लगता है। अथर्ववेद में कहा गया है कि राष्ट्र राजा

के हाथों में हो तथा वह और देवता इसे मिलकर सुदृढ़ बनाये।

राजा के पद का महत्व उत्तर वैदिक ग्रंथों में मिलने लगता है। राजा के दैवी अधिकारों की घोषणा ऋग्वेद में ही हुई, जब एक राजा पुरु यह घोषणा करता है कि "मैं इंद्र हूँ, मैं वरुण हूँ।" किंतु व्यवस्थित रूप से राजत्व का सिद्धान्त 'ऐतरेय ब्राह्मण' में विकसित हुआ। ऐतरेय ब्राह्मण की कहानी से ज्ञात होता है कि जब देवता निरंतर पराजित हो रहे थे तो उन्होंने सोम को राजा नियुक्त किया और फिर वे युद्ध जीतने लगे। तैत्तरीय उपनिषद में यही कहानी कुछ परिवर्तित रूप से मिलती है, जब यह कहा गया कि देवताओं ने प्रजापति के प्रमुख एक यज्ञ किया तो फिर प्रजापति ने खुश हो कर इंद्र को (अपनेपुत्र) राजा नियुक्त किया।

उत्तर वैदिक काल में राजा की शक्ति में वृद्धि हुई।

Scanned with CamScanner

राजपद स्पष्ट रूप से वंशानुगत हो गया। यद्यपि शतपथ ब्राह्मण में राजा के निर्वाचन की चर्चा है तथा ऐसे राजा विशपति कहलाते थे। सिद्धान्ततः राजा निरंकुश शासक होता था परंतु व्यवहार में सभा तथा समिति नामक संस्थाओं इस निरंकुशता की सीमा थी। अथर्ववेद के कुछ सुक्तों से ज्ञात होता है कि राजा जनता की भक्ति और समर्थन प्राप्त करने के लिये सदा लालायित रहता था।

कुछ मंत्रों से पता चलता है कि अत्याचारी शासक को जनता पदच्युत भी कर देती थी। उदाहरण के लिये शतपथ ब्राह्मण के अनुसार सृंजयों ने दुष्ट राजा पौंशायन को निकाल बाहर किया।

ताण्ड्य ब्राह्मण में तो प्रजा के द्वारा राजा के विनाश के लिये एक विशेष यज्ञ किये जाने का भी उल्लेख किया गया।

Scanned with CamScanner

अब राजा सर्वभूमिपति, सर्वजनिन एवं एकराट जैसी उपाधि लेने लगा। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार उत्तर का राजा विराट दक्षिण का राजा भोज, पश्चिम का स्वराट, मध्य देश का राजा - राजा और पूरब का राजा सम्राट कहलाता था। एकराट और सार्वभौम जैसी उपाधियाँ चारों दिशाओं में जीतने वाले के लिये सुरक्षित रखी गयी वैराज्य का अर्थ उस राज्य से है जहाँ राजा नहीं होता था। यहाँ वैराज्य का अर्थ गणतंत्रात्मक व्यवस्था से लगाया जाता है।

गोपथ ब्राह्मण में विभिन्न क्षेत्रों के राजाओं द्वारा कराये जाने वाले यज्ञों का वर्णन है जैसे

(1) राजा :- राजसूय यज्ञ

(2) सम्राट :- वाजपेय यज्ञ

(3) विराट :- पुरुषमेध यज्ञ

(4) सर्वराट :- सर्वमेध यज्ञ

Scanned with CamScanner

⑤ स्वराट :- अश्वमेध यज्ञ

शतपथ ब्राह्मण में उस राजा को लिये राष्ट्र शब्द का प्रयोग किया गया है, जो निरंकुशता पूर्वक जनता की संपत्ति का उपभोग करता है। अथर्ववेद में राजा को जनता का भक्षक (विषमत्ता) कहा गया है कुल मिलाकर राजपद की प्रतिष्ठा बढ़ी क्योंकि इस से कुछ संस्कार आवश्यक रूप से जुड़ गये। कुछ महत्वपूर्ण संस्कार इस प्रकार थे।

राज्याभिषेक :- राजा के लिये राज्याभिषेक संस्कार सबसे महत्व पूर्ण था। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार इस संस्कार का उद्देश्य परम शक्ति की प्राप्ति था। कभी-कभी दो राज्याभिषेक भी होते थे, जैसे युधिष्ठिर के दो राज्याभिषेक हुए जिनमें पहला दिग्विजय के उपरांत तथा दूसरा महाभारत युद्ध के पश्चात

राज्य के कुछ विशेष मंत्रियों के भी अभिषेक होते थे। राज पुरोहित का भी एक संस्कार (समारोह) हुआ करता।

राजसूय यज्ञ :-

यह अपेक्षाकृत एक बड़ा यज्ञ था। वर्णन शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। राजसूय यज्ञ राज्याभिषेक की तरह आवश्यक नहीं होकर वैधिक एवं धार्मिक अनुष्ठान था। यह एक विशेष उद्देश्य से किया जाता था और इसमें राज्याभिषेक संस्कार भी सम्मिलित होते थे। अभिषेक 17 प्रकार के जल स्त्रोतों से होता था। इसमें प्रतिनिधि नदी सरस्वती थी। अभिषेक संस्कार के समय 12 रत्नियों की, एक रानी की, एक हाथी की, एक सफेद घोड़े की, एक सफेद बैल की तथा एक श्वेत छत्र की उपस्थिति आवश्यक थी। इस यज्ञ के दौरान राजा का लगभग एक दर्जन रत्नियों के

घर खाना होता था जिनमें से परत्नियों का स्त्री होना आवश्यक था। तैत्तिरीय ब्राह्मण के अनुसार 12 रत्नियों में महिषी, वावाता तथा परिवृक्ति स्त्री थी। राजसूय तथा राज्याभिषेक यज्ञ में वरुण देवता पार्थिव शरीर में प्रकट होते थे। यह संस्कार एक वर्ष या अधिक दिनों तक चल सकता था।

वाजपेय यज्ञ (शक्ति का पान)

इस यज्ञ का उद्देश्य शासक को नवजीवन प्रदान करना तथा उसकी शारीरिक एंव आत्मिक शक्ति को बढ़ाना तथा इसी से जुड़ा एक समारोह रथ दौड़ होता था। जिसमें राजा का रथ सबसे आगे निकलता था।

अश्वमेध यज्ञ :- यह एक विस्तृत समारोह था। इसका उद्देश्य राज्य का विस्तार करना तथा राज्य के लोगों को सुख और समृद्धि प्रदान करना था।

Scanned with CamScanner